सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में शुद्ध लेखन पर हिंदी कार्यशाला

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में 10 फरवरी 2017 को 'शुद्ध लेखन पर हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन विगत 18 जनवरी 2017 को हिंदी भाषी सहकर्मियों के लिए आयोजित हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता के परिप्रेक्ष्य में किया गया। कार्यशाला में संस्थान के प्रशासनिक व तकनीकी सहकर्मियों, परियोजना कर्मियों, जेआरएफ/ एसआरएफ, प्रशिक्षणार्थियों आदि के अतिरिक्त अन्य सहकर्मी भी उपस्थित हुए। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को लिखते समय होने वाली सामान्य गलतियों की जानकारी देते हुए भाषा को सही व शुद्ध रूप से लिखने के लिए प्रेरित करना था।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को जानकारी देते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

संस्थान के क्लास रूम 1 (लेक्चर रूम) में आयोजित कार्यशाला में हिंदी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने भाषा की सामान्य परिभाषा व लिपि पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर देवनागरी लिपि के मानकीकरण पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों को मानक देवनागरी लिपि की जानकारी दी। प्रतिभागियों से परस्पर चर्चा चर्चा करते हुए उन्होंने राजभाषा हिंदी व सामान्य हिंदी में अंतर भी स्पष्ट किया। उन्होंने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है तथा लिपि देवनागरी है । उन्होंने बताया कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ही मान्य है।

अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हम सभी हिंदी भली-भाँति पढ़ व लिख सकते हैं, परंतु शुद्धता का अपना महत्व है यह भी हम सभी जानते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा भी है। इस आयोजन का उद्देश्य केवल आपको अपनी इस भाषा को सही व शुद्ध लिखने के लिए प्रेरित करना व भूलवश या अज्ञानतावश होने वाली सामान्य अशुद्धियों की जानकारी देना है।

कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को शुद्ध लेखन का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी अपनी भाषा है और इसे सही रूप में लिखना हमारा नैतिक ही नहीं राष्ट्रीय दायित्व भी है। उन्होंने कहा कि आज हिंदी को विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनने का गौरव प्राप्त हो चुका है। यह गौरव केवल हिंदी भाषी ही नहीं अपितु हिंदीतर भाषी राज्यों के प्रयासों से ही संभव हुआ है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हम सभी के समन्वित प्रयासों से शीघ्र ही हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त होगा।

कार्यशाला के दौरान श्रुतलेख प्रतियोगिता के प्रश्न पत्र पर चर्चा करते हुए उन्होंने प्रतिभागियों की जिज्ञासा व शंकाओं का समाधान किया। परस्पर चर्चा के दौरान प्रतिभागियों को सामान्य रूप से की जाने वाली गलतियों की जानकारी दी। मानक हिंदी वर्णमाला की जानकारी देते हुए उसके सही उच्चारण पर बल दिया। हिंदी की विशेषता की चर्चा करते हुए श्री बौरा ने बताया कि विश्व की अन्य कई भाषाओं के विपरीत हिंदी जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इस अवसर पर उन्होंने श्रुतलेख प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को उनकी उत्तर पुस्तिकाएँ दिखाई तथा विजेताओं की घोषणा की।

अंत में उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी कार्यशाला से अवश्य लाभान्वित हुए होंगे तथा भविष्य में भाषा लेखन में होने वाली सामान्य त्रुटियों से बचेंगे। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के उपरांत भी इस संबंध में किसी भी समस्या के लिए आप नि:संकोच राजभाषा प्रकोष्ठ में संपर्क कर सकते हैं। प्रतिभागियों ने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अंत में श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया व कार्यशाला के आयोजन में सहयोग करने वाले अधिकारियों व सहकर्मियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया।